

प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के कथा
साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री चेतना

डॉ. दीप्ति सिंह



वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर

कानपुर - 208021 (उ.प्र.)

भूमिका

- पुस्तक** : प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री चेतना
- लेखिका** : डॉ. दीप्ति सिंह
- ©** : लेखिका
- प्रकाशक** : वान्या पब्लिकेशंस
1ए/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
कानपुर - 208 021
Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
Website : www.vanyapublications.com
Mob. : 9450889601, 7309038401
- संस्करण** : प्रथम, 2025
- मूल्य** :
- शब्द-सज्जा** : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
- आवरण** : गौरव शुक्ल, कानपुर
- मुद्रण** : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

साहित्य, मानव समाज की भावात्मक एवं गतिशील चेतना की अभिव्यक्ति है। साहित्य में समाज का चित्रण नहीं हुआ बल्कि उसका सृजन हुआ करता है इसलिए समाज के समानांतर वह भी एक सृष्टि होता है जिसे प्रति सृष्टि कहा जाता है। इस गतिशील चौतन्त्रता की परिकल्पना है, कि हमारे सामने नीति, रीति, आदर्श, मर्यादा, नैतिकता, आचरण, रहन-सहन और परम्परा के प्रतिमान निरन्तर परिवर्तित होते रहे हैं। परिवर्तन के फलस्वरूप राजनीति, समाज, धर्म, नियम संहिताएँ एवं संस्कृति आदि सभी पर समान रूप से प्रभाव दिखायी देता है। जैसे-जैसे परिस्थितियाँ बदली हैं, वैसे-वैसे हमारे विधि-विधानों, जीवन-मूल्यों, परम्पराओं, रूढ़ियों एवं व्यवहारों में व्यापक बदलाव भी होता रहा है। इस होने वाले बदलाव को साहित्य सदैव आत्मसात किये रहता है।

चिन्तन प्रक्रिया वस्तुतः एक खोजी प्रवृत्ति की यात्रा का नाम है, जिसमें अभिव्यक्त की प्रक्रिया का सहारा लेकर रचनाकार नयी खोज की ओर अग्रसर रहता है। यही उसकी चेतना के निर्माण की प्रक्रिया है जहाँ वह समाज से हर एक विशेष प्राणी का दर्जा प्राप्त करता है। इस क्रम में स्त्री साहित्य लेखन के चिन्तन की प्रक्रिया में प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा दोनों की महती भूमिका है। इन्होंने स्त्रियों में संवेदना एवं स्त्री चेतना जगाकर स्त्री जीवन को बेहतर बनाने का संकल्प लिया है जिसमें उन्हें सफलता मिल रही है।

मनुष्य के चिन्तन के विकास में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध सदैव चिन्तन के केन्द्र में रहा है। पहले जब मनुष्य वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के तहत नहीं रहता था, तो उसकी जीवन शैली अव्यवस्थित होने के साथ-साथ मुक्त आदिम समाज में थी। जैसे-जैसे वह सम्य होता गया, बहुत कुछ बदल गया। भोजन, वस्त्र, रहन-सहन किसी नियम से बँधे नहीं थे। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के मामले में भी कोई बन्धन नहीं था। एक स्त्री कई पुरुषों के साथ सम्बन्ध बना सकती थी और एक पुरुष कई स्त्रियों के साथ। धीरे-धीरे मनुष्य के चिन्तन का विकास हुआ और विकसित तथा व्यवस्थित समाज का निर्माण हुआ। लेकिन इसी के साथ मनुष्य की स्वतन्त्रता पर व्यवस्था ने नियंत्रण अथवा अनुशासन लगाया और उसकी मुक्त जीवन शैली परिवर्तित हुई। जाहिर है, इसका प्रभाव स्त्री-पुरुष

सम्बन्धों पर भी पड़ा। विवाह संस्था के माध्यम से समाज ने एक पुरुष और एक स्त्री के सम्बन्ध की स्वीकृति प्रदान की। किन्तु कालान्तर में स्थितियाँ बदलती गयी और पुरुष स्त्री को गुलाम बनाता गया। जो स्त्री आर्थिक व्यवस्था में मनुष्य की विकास यात्रा में बराबर सहयोगी रही, उसी वर्चस्ववादी समाज में स्त्रियाँ, अमानवीय जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं। भौतिक सम्पन्नता तो आयी किन्तु भावात्मक सम्पन्नता का अभाव समाज में आज भी व्याप्त है।

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा स्त्री चेतना की सशक्त हस्ताक्षर हैं। जिन्होंने अपने संवेगात्मक लेखन से स्त्री चिन्तन को एक नयी जमीन तैयार की है। इनके साहित्य में नारी विषयक समस्या की अभिव्यक्ति का स्वर मुख्य रहा है। उनके कथा साहित्य की परिवर्तनशीलता और स्त्री चेतना का बदलता परिप्रेक्ष्य परस्पर सन्निहित गतिशील है। इनके लेखन ने परम्परा, रूढ़ि, नैतिकता आदि के पुरुष सत्तात्मक मूल्यों को उजागर करके स्त्री चेतना के बहुआयामी विस्तार किये हैं। इन्होंने स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं और क्रियाकलापों को बड़ी बेबाकी से अभिव्यक्त किया है।

पुस्तक 'प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री चेतना : एक तुलनात्मक अध्ययन' है। अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण पुस्तक को मुख्यतः पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला अध्याय—'हिन्दी कथा साहित्य का समकालीन परिदृश्य और स्त्री लेखन' है। इसके अन्तर्गत हिन्दी कथा साहित्य की विकास यात्रा पर विचार करते हुए उसके समकालीन परिदृश्य को उद्घाटित किया गया है। स्त्री चेतना का उभार हिन्दी कथा साहित्य में क्या स्वरूप रहा है? पर भी विचार किया गया है। इस क्रम में स्त्री लेखन का पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य एवं स्त्री लेखन का भारतीय परिप्रेक्ष्य को उभारा गया है।

दूसरे अध्याय का शीर्षक— 'प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा का कथा संसार : परिचय और रचनात्मक सन्दर्भ' है। इसके अन्तर्गत दो उप-अध्याय हैं प्रभा खेतान : कथा संसार परिचय और रचनात्मक सन्दर्भ एवं मैत्रेयी पुष्पा : कथा संसार परिचय और रचनात्मक सन्दर्भ। इसके अन्तर्गत दोनों लेखिकाओं के रचना संसार को उद्घाटित करते हुए उनके बहुआयामी स्त्री जीवन पर केन्द्रित रचनात्मक सन्दर्भ को प्रस्तुत किया गया है, प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्तित्व का परीक्षण भी किया गया है।

तीसरे अध्याय का शीर्षक— 'प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में स्त्री चेतना सन्दर्भ और मुद्दे' है। इसमें पाँच उप-अध्याय हैं—

'पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध', 'विवाह संस्था और स्त्री स्वातंत्र्य', 'आर्थिक विषमता और स्त्री स्वातंत्र्य', 'स्त्री भाषा के स्वातंत्र्य का प्रश्न' और 'स्त्री मुक्ति की राजनीति और भारतीय राजनीति।' इन उप-अध्यायों में पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री मुक्ति के विविध प्रश्नों को उठाने के साथ-साथ उसके उत्तर की खोज भी की गयी है।

चौथे अध्याय का शीर्षक— 'प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में अभिव्यक्त की प्रणाली एवं कथा भाषा के आयाम : स्त्री चेतना के नजरिए से' है।

इसके अन्तर्गत 'अभिव्यक्ति की प्रणाली', 'स्त्री चेतना की कथा भाषा' एवं 'शिल्पगत संरचना' उप-अध्याय हैं। इन उप-अध्यायों में स्त्री चेतना के नजरिए से प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में अभिव्यक्ति की प्रणाली, स्त्री चेतना की निर्मित, कथा भाषा का स्वरूप एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य को उद्घाटित किया गया है।

पाँचवाँ अध्याय 'उपसंहार' है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध के पहले अध्याय से लेकर चौथे अध्याय तक क्रमशः निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्रत्येक अध्याय के निष्कर्ष एवं उपलब्धियों पर विचार किया गया है।

अन्त में 'परिशिष्ट' के अन्तर्गत 'पुस्तक' में उपयोगी अध्ययन सामग्री की 'सन्दर्भ ग्रन्थ सूची' शीर्षक के अन्तर्गत रखा गया है। इसमें चार श्रेणियाँ हैं— आधार ग्रन्थ, सहायक ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएँ एवं अन्य क्रिया-कलाप आदि सम्मिलित है। साक्षात्कार व यात्राओं का विवरण भी इसी के अन्तर्गत प्रस्तुत है।

हिन्दी कथा साहित्य का समकालीन परिदृश्य और स्त्री लेखन

अनुक्रम

1. हिन्दी कथा साहित्य का समकालीन परिदृश्य और स्त्री लेखन	00
2. प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा का कथा संसार : परिचय और रचनात्मक संदर्भ	00
3. प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में स्त्री चेतना : संदर्भ और प्रमुख मुद्दे	00
4. प्रभा खेतान और मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में अभिव्यक्ति की प्रणाली एवं कथा भाषा के आयाम : स्त्री चेतना के नजरिये से उपसंहार	00
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	00

‘स्त्री-लेखन’ शब्द से सामान्य अर्थ में जो भाव प्रकट होता है वह है स्त्री साहित्यकारों द्वारा लिखी गई कोई भी साहित्यिक कृति। दूसरा भाव स्त्रियों के बारे में लेखन-स्त्री साहित्यकार अपने लेखन द्वारा सशक्त नारी पात्रों के माध्यम से प्रखर नारी चेतना को अभिव्यक्त करती हैं। तीसरा भाव स्त्रियों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य जो स्त्री साहित्यकारों द्वारा स्त्रियों के शोषण तथा उनकी स्थिति के बारे में लिखा गया है। यह साहित्य महिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने और उनके समाजीकरण के लिए लिखा गया। समकालीन कथा साहित्य ऐसा माध्यम है, जिससे स्त्री साहित्यकारों ने अपनी आवाज बुलन्द की तथा सदियों से स्त्रियों पर हो रहे अत्याचारों का प्रतिकार किया।

समकालीन समय का यथार्थ अंकन करने में हिन्दी स्त्री लेखन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिन्होंने समसामयिक जीवन अनुभूतियों की जटिलताओं का चित्र अपने कथा-साहित्य में उकेरा है। समकालीन परिवेश में पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण, मानवीय मूल्यों का क्षरण, कुंठा, युवा पीढ़ी की दिशाहीनता, जीवन में अर्थ का महत्व, उपभोक्तावाद, शहरीकरण, बाजारवाद, पारिवारिक विघटन, स्वार्थपूर्ण राजनीति, निराशा आदि समस्याएँ व्याप्त हैं, जिनके प्रति स्त्रियों को जागरूक होने की आवश्यकता है। महिला साहित्यकारों का इस समय सबसे पहला उद्देश्य है, कि समकालीन परिवेश में स्त्रियों के लिए विभिन्न चुनौतियों के प्रति विद्रोह करने के लिए स्त्रियों को सक्षम बनाना। स्त्री समाज जब अपने अधिकार की बात करता है, तो पूरा पुरुष समाज विरोध में खड़ा हो जाता है तथा उसे हर प्रकार से कमजोर करने की कोशिश करता है। स्त्री समाज सभी चुनौतियों का सामना करके अपना रास्ता स्वयं बनाने की कोशिश कर रहा है और उसमें सफल भी हो रहा है।